गुप्तकालीन अभिलेखों में ऐतिहासिक तथ्यों का साहित्यिक निरूपण

नीतू कुमारी[1], डॉ. विकास आर्य[2]

[1]शोधार्थी संस्कृत विभाग

[2]शोध निर्देशक सहायक प्राध्यापक संस्कृत विभाग

मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय सीहोर मध्य-प्रदेश

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21590844

सारांश

गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है, क्योंकि इस काल में राजनीतिक स्थिरता, सांस्कृतिक उत्कर्ष, धार्मिक सहिष्णुता तथा साहित्यिक उन्नति अपने चरम पर पहुँची। इस युग की ऐतिहासिक जानकारी का प्रमुख आधार अभिलेख हैं, जो तत्कालीन शासन-व्यवस्था, सामाजिक संरचना, धार्मिक प्रवृत्तियों तथा सांस्कृतिक जीवन का प्रामाणिक परिचय प्रदान करते हैं। यद्यपि अभिलेखों का मुख्य उद्देश्य राजकीय घटनाओं, विजय अभियानों अथवा दान-संबंधी विवरणों का अंकन था, तथापि उनमें प्रयुक्त भाषा, शैली, अलंकार, उपमा, रूपक तथा काव्यात्मक अभिव्यक्ति उन्हें साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण बनाती है। विशेषतः समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, स्कन्दगुप्त का भीतरी अभिलेख, जूनागढ़ अभिलेख, एरण अभिलेख, उदयगिरि तथा मंदसौर अभिलेख आदि में इतिहास और साहित्य का अद्‌भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेखों का साहित्यिक दृष्टि से विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि इन अभिलेखों में ऐतिहासिक तथ्यों का प्रस्तुतीकरण केवल तथ्यात्मक नहीं, अपितु काव्यात्मक एवं कलात्मक शैली में किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि गुप्तकालीन अभिलेख इतिहास और साहित्य के मध्य सेतु का कार्य करते हैं तथा भारतीय संस्कृत गद्य-काव्य की समृद्ध परम्परा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

बीज शब्दः गुप्तकाल, अभिलेख, प्रयाग प्रशस्ति, ऐतिहासिक तथ्य, साहित्यिक अध्ययन, संस्कृत गद्य, प्रशस्ति साहित्य।

1. भूमिका

भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में अभिलेखों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। साहित्यिक ग्रन्थों, पुराणों, यात्रावृत्तांतों तथा पुरातात्त्विक अवशेषों के साथ-साथ अभिलेख भी इतिहास के ऐसे प्रामाणिक स्रोत हैं, जिनके आधार पर तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। अभिलेख तत्कालीन शासकों द्वारा शिलाओं, स्तम्भों, गुफाओं, ताम्रपत्रों तथा मंदिरों

की दीवारों पर उत्कीर्ण कराए जाते थे। इनमें राजाओं की विजयों, प्रशासनिक व्यवस्थाओं, दान, धार्मिक कार्यों तथा सार्वजनिक निर्माणों का उल्लेख मिलता है। चूँकि ये समकालीन स्रोत हैं, अतः इतिहासकार इन्हें अत्यधिक विश्वसनीय मानते हैं।

गुप्तकालीन अभिलेख भारतीय अभिलेखीय परम्परा के सर्वाधिक विकसित उदाहरणों में गिने जाते हैं। इस काल में संस्कृत भाषा राजकीय अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बनी तथा प्रशस्ति-लेखन की परम्परा ने विशेष विकास प्राप्त किया। गुप्त शासकों ने अपने राजनीतिक वैभव, सैन्य उपलब्धियों तथा सांस्कृतिक आदर्शों को अभिलेखों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इन अभिलेखों की भाषा केवल प्रशासनिक सूचना तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसमें साहित्यिक सौन्दर्य, काव्यात्मक अभिव्यक्ति तथा अलंकारिक शैली का समावेश हुआ। परिणामस्वरूप गुप्तकालीन अभिलेख इतिहास और साहित्य दोनों की अमूल्य धरोहर बन गए।

गुप्तकाल में हरिषेण, वत्सभट्टि तथा अन्य विद्वान प्रशस्तिकारों ने अभिलेखों की रचना ऐसे साहित्यिक कौशल के साथ की कि वे संस्कृत गद्य-काव्य के उत्कृष्ट नमूने बन गए। इन अभिलेखों में राजाओं का चरित्र-वर्णन, विजय अभियानों का विवरण, धार्मिक आदर्शों की अभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक चेतना का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली शैली में किया गया है। अनेक स्थानों पर उपमा, अनुप्रास, रूपक, अतिशयोक्ति तथा दीर्घ समासों का प्रयोग अभिलेखों को साहित्यिक गरिमा प्रदान करता है। इस प्रकार अभिलेख केवल ऐतिहासिक सूचना के साधन नहीं, बल्कि तत्कालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों के भी प्रतिनिधि स्रोत हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेखों में निहित ऐतिहासिक तथ्यों का साहित्यिक दृष्टि से विश्लेषण करना है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि गुप्तकालीन अभिलेखों में इतिहास का प्रस्तुतीकरण किस प्रकार साहित्यिक शैली, अलंकारिक अभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक आदर्शों के माध्यम से किया गया है। यह अध्ययन इतिहास तथा साहित्य के अन्तर्सम्बन्ध को स्पष्ट करने के साथ-साथ संस्कृत प्रशस्ति साहित्य की विशिष्टता को भी रेखांकित करता है।

2. शोध के उद्देश्य

- गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेखों में निहित ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करना।
- अभिलेखों की साहित्यिक शैली एवं काव्यात्मक विशेषताओं का विश्लेषण करना।
- प्रशस्ति साहित्य के रूप में गुप्तकालीन अभिलेखों की विशिष्टता का मूल्यांकन करना।
- इतिहास एवं साहित्य के अन्तर्सम्बन्ध का विश्लेषण करना।
- गुप्तकालीन अभिलेखों के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक महत्त्व को स्पष्ट करना।

3. शोध-पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए प्रयाग प्रशस्ति, भीतरी स्तम्भ अभिलेख, जूनागढ़ अभिलेख, एरण अभिलेख, उदयगिरि अभिलेख तथा मंदसौर अभिलेख को प्रमुख स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। इन अभिलेखों का साहित्यिक, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए उनमें प्रयुक्त भाषा, शैली, अलंकार, ऐतिहासिक घटनाओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का अध्ययन किया गया है। साथ ही आधुनिक इतिहासकारों एवं अभिलेखविदों के शोधग्रन्थों का भी उपयोग किया गया है।

4. गुप्तकालीन अभिलेखों का स्वरूप एवं साहित्यिक परम्परा

गुप्तकालीन अभिलेख भारतीय अभिलेखीय साहित्य के विकास की परिपक्व अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। पूर्ववर्ती काल के अभिलेख जहाँ मुख्यतः प्रशासनिक अथवा धार्मिक घोषणाओं तक सीमित थे, वहीं गुप्तकालीन अभिलेखों में साहित्यिक सौन्दर्य, संस्कृत भाषा की परिष्कृत अभिव्यक्ति तथा काव्यात्मक शैली का उल्लेखनीय विकास हुआ। इस काल में अभिलेख केवल राजाज्ञा या दानपत्र न रहकर राजकीय प्रतिष्ठा, सांस्कृतिक आदर्शों तथा राजनीतिक उपलब्धियों के कलात्मक प्रस्तुतीकरण का माध्यम बन गए। विशेषतः प्रशस्ति-लेखन की परम्परा ने अभिलेखों को साहित्यिक स्वरूप प्रदान किया।

गुप्तकालीन अभिलेखों की भाषा परिमार्जित संस्कृत है, जिसमें वैदर्भी रीति की मधुरता, दीर्घ समासों की गरिमा तथा अलंकारिक अभिव्यक्ति का संतुलित प्रयोग मिलता है। इन अभिलेखों में इतिहास को शुष्क तथ्यों के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया, बल्कि उसे साहित्यिक सौन्दर्य से अलंकृत कर पाठक के समक्ष रखा गया है। राजा की वीरता, उदारता, धार्मिकता तथा प्रजावत्सलता का वर्णन ऐसे काव्यात्मक ढंग से किया गया है कि अभिलेख ऐतिहासिक दस्तावेज होने के साथ-साथ उत्कृष्ट साहित्यिक रचना का भी रूप ग्रहण कर लेते हैं। यही कारण है कि गुप्तकालीन अभिलेख भारतीय संस्कृत गद्य-काव्य की अमूल्य निधि माने जाते हैं।

5. गुप्तकालीन अभिलेखों में ऐतिहासिक तथ्यों का साहित्यिक निरूपण

5.1 प्रयाग प्रशस्ति: इतिहास और काव्य का अद्‌भुत समन्वय

गुप्तकालीन अभिलेखों में प्रयाग प्रशस्ति का स्थान सर्वोपरि है। यह अभिलेख समुद्रगुप्त की विजयों, राजनीतिक दूरदर्शिता तथा सांस्कृतिक व्यक्तित्व का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज माना जाता है। इसका लेखन समुद्रगुप्त के सभाकवि एवं महासन्धिविग्रहिक हरिषेण ने किया था। यद्यपि इसका मूल उद्देश्य समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का वर्णन करना था, तथापि इसकी रचना केवल ऐतिहासिक वृत्तांत नहीं है, बल्कि उच्चकोटि की साहित्यिक कृति के रूप में भी प्रतिष्ठित है। इसमें इतिहास को तथ्यात्मक शैली में न प्रस्तुत कर काव्यात्मक भाषा, अलंकारों तथा भावात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह प्रशस्ति संस्कृत गद्य-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण बन गई है।

प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त के दिग्विजय अभियान का अत्यन्त प्रभावशाली वर्णन मिलता है। आर्यावर्त, दक्षिणापथ तथा सीमावर्ती राज्यों पर उसकी विजय को केवल राजनीतिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि धर्म, नीति और पराक्रम की विजय के रूप में चित्रित किया गया है। शत्रु राजाओं के पराभव, पराजित राज्यों के पुनः राज्याधिकार तथा अधीनस्थ शासकों के प्रति उदार नीति का वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली शैली में किया गया है। इस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं का प्रस्तुतीकरण साहित्यिक सौन्दर्य के साथ किया गया है, जिससे अभिलेख केवल सूचना का माध्यम न रहकर प्रेरणात्मक साहित्य बन जाता है।

प्रशस्ति में समुद्रगुप्त के व्यक्तित्व को बहुआयामी रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह केवल विजेता राजा नहीं, बल्कि विद्वान, दानी, धर्मनिष्ठ, संगीतज्ञ तथा कवि-हृदय शासक के रूप में चित्रित किया गया है। उसकी वीणा-वादन की दक्षता, विद्वानों के प्रति सम्मान तथा धार्मिक उदारता का उल्लेख यह दर्शाता है कि गुप्तकालीन राजसत्ता केवल सैन्य शक्ति पर आधारित नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक नेतृत्व का भी प्रतीक थी। इस प्रकार इतिहास का साहित्यिक रूपान्तरण अभिलेख को स्थायी साहित्यिक महत्त्व प्रदान करता है।

हरिषेण ने प्रशस्ति में दीर्घ समासों, अनुप्रास, उपमा तथा अतिशयोक्ति जैसे अलंकारों का अत्यन्त प्रभावी प्रयोग किया है। राजा की तुलना देवताओं से करना, उसकी विजयों को दैवी अनुग्रह का परिणाम बताना तथा उसके गुणों को आदर्श शासक के रूप में चित्रित करना तत्कालीन प्रशस्ति साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इससे स्पष्ट होता है कि प्रयाग प्रशस्ति केवल राजकीय दस्तावेज नहीं, बल्कि गुप्तकालीन साहित्यिक चेतना का प्रतिनिधि ग्रन्थ भी है।

5.2 भीतरी स्तम्भ अभिलेख: वीरता एवं राजधर्म का साहित्यिक चित्रण

स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तम्भ अभिलेख गुप्त साम्राज्य के राजनीतिक संघर्षों तथा राजकीय आदर्शों का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इस अभिलेख में हूणों के आक्रमण, साम्राज्य की रक्षा तथा स्कन्दगुप्त की वीरता का वर्णन मिलता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह अभिलेख उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों का प्रामाणिक प्रमाण प्रस्तुत करता है, किन्तु साहित्यिक दृष्टि से यह वीररसप्रधान प्रशस्ति के रूप में अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अभिलेख में स्कन्दगुप्त को राष्ट्ररक्षक, धर्मसंरक्षक तथा अदम्य साहस से युक्त सम्राट के रूप में प्रस्तुत किया गया है। युद्ध की परिस्थितियों का वर्णन करते समय भाषा में ओज, गति तथा प्रभावोत्पादकता का समुचित समन्वय दिखाई देता है। लेखक ने राजा की विजय को केवल सैन्य उपलब्धि न मानकर सम्पूर्ण राष्ट्र की रक्षा के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार ऐतिहासिक तथ्य साहित्यिक आदर्शवाद के साथ संयुक्त होकर प्रस्तुत होते हैं।

भीतरी अभिलेख में राजधर्म की अवधारणा भी अत्यन्त प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुई है। स्कन्दगुप्त को प्रजापालक, धर्मनिष्ठ तथा लोककल्याणकारी शासक के रूप में चित्रित किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि गुप्तकालीन अभिलेखों में राजा का आदर्श केवल विजेता होना नहीं था, बल्कि वह समाज की नैतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का संरक्षक भी माना जाता था। यही साहित्यिक दृष्टिकोण अभिलेख को साधारण ऐतिहासिक विवरण से ऊपर उठाकर आदर्शवादी साहित्य का रूप प्रदान करता है।

5.3 जूनागढ़ अभिलेख: प्रशासन और लोककल्याण का साहित्यिक रूप

स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख गुप्तकालीन प्रशासनिक दक्षता तथा लोककल्याणकारी शासन का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस अभिलेख में सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण का उल्लेख मिलता है, जो तत्कालीन जनकल्याणकारी नीतियों का परिचायक है। यद्यपि यह घटना ऐतिहासिक तथ्य है, किन्तु उसका प्रस्तुतीकरण अत्यन्त साहित्यिक शैली में किया गया है।

अभिलेख में शासक की प्रशंसा केवल युद्ध-विजय के आधार पर नहीं, बल्कि जनहितकारी कार्यों के आधार पर भी की गई है। जलाशय के पुनर्निर्माण को लोकमंगल, धर्म तथा राजकीय उत्तरदायित्व के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार प्रशासनिक उपलब्धि को नैतिक एवं सांस्कृतिक आदर्श के रूप में चित्रित किया गया है। भाषा में संस्कृत गद्य की परिपक्वता तथा भावात्मक सौन्दर्य स्पष्ट दिखाई देता है।

इस अभिलेख की एक विशेषता यह भी है कि इसमें शासन की सफलता को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा जनजीवन की समृद्धि से जोड़ा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि गुप्तकालीन साहित्यिक अभिव्यक्ति केवल राजाओं की प्रशंसा तक सीमित नहीं थी, बल्कि लोककल्याण को भी साहित्यिक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित करती थी।

5.4 एरण, उदयगिरि एवं मंदसौर अभिलेख: सांस्कृतिक चेतना का साहित्यिक स्वरूप

एरण, उदयगिरि तथा मंदसौर अभिलेख गुप्तकालीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन के महत्त्वपूर्ण साक्ष्य हैं। इन अभिलेखों में तत्कालीन समाज की धार्मिक आस्थाएँ, कला, स्थापत्य, दान-परम्परा तथा सांस्कृतिक मूल्यों का उल्लेख मिलता है। साहित्यिक दृष्टि से इन अभिलेखों की विशेषता यह है कि इनमें धार्मिक भावनाओं एवं सांस्कृतिक आदर्शों को अत्यन्त परिष्कृत संस्कृत भाषा में व्यक्त किया गया है।

उदयगिरि अभिलेख में वैष्णव परम्परा तथा राजकीय संरक्षण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। धार्मिक घटनाओं का वर्णन केवल तथ्यात्मक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक गरिमा के साथ किया गया है। इसी प्रकार एरण अभिलेख में वीरता, धर्म तथा सामाजिक मूल्यों का समन्वित चित्रण मिलता है। मंदसौर अभिलेख में तत्कालीन शिल्पियों, समाज तथा सांस्कृतिक समृद्धि का ऐसा वर्णन है जो साहित्यिक संवेदनशीलता से परिपूर्ण है। विशेष रूप से वत्सभट्टि द्वारा रचित मंदसौर प्रशस्ति संस्कृत काव्यशैली की

उत्कृष्ट अभिव्यक्ति मानी जाती है, जिसमें प्रकृति-वर्णन, नगर-चित्रण तथा सांस्कृतिक वैभव का अत्यन्त कलात्मक निरूपण हुआ है।

इन अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि गुप्तकालीन अभिलेख केवल राजनीतिक इतिहास के स्रोत नहीं थे, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक जीवन, धार्मिक विचारधारा तथा साहित्यिक परम्परा के भी सशक्त दर्पण थे। ऐतिहासिक घटनाओं को साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम से स्थायित्व प्रदान करना ही गुप्तकालीन प्रशस्तिकारों की सबसे बड़ी विशेषता थी।

6. गुप्तकालीन अभिलेखों का साहित्यिक विश्लेषण

गुप्तकालीन अभिलेख भारतीय अभिलेखीय परम्परा के ऐसे सशक्त उदाहरण हैं, जिनमें इतिहास और साहित्य का अद्वितीय समन्वय दृष्टिगोचर होता है। इन अभिलेखों का मूल उद्देश्य राजकीय उपलब्धियों, धार्मिक कार्यों, दान तथा प्रशासनिक गतिविधियों का अभिलेखन था, किन्तु उनकी भाषा, शैली और अभिव्यक्ति उन्हें मात्र ऐतिहासिक दस्तावेज न रहने देकर उच्चकोटि के साहित्यिक ग्रन्थों के रूप में प्रतिष्ठित करती है। विशेष रूप से प्रयाग प्रशस्ति, भीतरी, जूनागढ़ तथा मंदसौर अभिलेखों में प्रयुक्त संस्कृत भाषा की परिमार्जित शैली, दीर्घ समास, अलंकारों का प्रयोग तथा भावात्मक अभिव्यक्ति यह सिद्ध करती है कि गुप्तकाल तक प्रशस्ति-साहित्य एक विकसित साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित हो चुका था। गुप्तकाल में संस्कृत राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई और अभिलेखों में उसी के माध्यम से राजकीय वैभव, सांस्कृतिक आदर्श तथा धार्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति की गई। इस कारण अभिलेख तत्कालीन साहित्यिक संस्कृति के भी महत्त्वपूर्ण प्रमाण बन गए।

गुप्तकालीन प्रशस्तियों की सबसे बड़ी साहित्यिक विशेषता यह है कि उनमें ऐतिहासिक घटनाओं का प्रस्तुतीकरण केवल कालक्रमानुसार नहीं किया गया, बल्कि उन्हें आदर्शवादी एवं काव्यात्मक रूप प्रदान किया गया। समुद्रगुप्त की विजयों का वर्णन केवल युद्ध-वृत्तांत नहीं है, बल्कि उसे धर्मविजय, क्षात्रतेज तथा सार्वभौम सम्राट के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार स्कन्दगुप्त के अभिलेखों में हूणों पर विजय को केवल सैन्य सफलता न मानकर राष्ट्र एवं संस्कृति की रक्षा के रूप में चित्रित किया गया है। इस प्रकार अभिलेखों में इतिहास का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि राजसत्ता की वैधता स्थापित करना, जनता में विश्वास उत्पन्न करना तथा शासक की आदर्श छवि का निर्माण करना भी था। यही कारण है कि इन अभिलेखों में तथ्य और कल्पना का संतुलित समन्वय दिखाई देता है, जिससे उनकी साहित्यिक प्रभावशीलता और अधिक बढ़ जाती है।

भाषिक दृष्टि से गुप्तकालीन अभिलेख संस्कृत गद्य की परिपक्वता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनकी भाषा में वैदर्भी रीति की सरलता तथा गौड़ी शैली की ओजस्विता का संतुलित प्रयोग मिलता है। दीर्घ समास, अनुप्रास, उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति तथा यमक जैसे अलंकार अभिलेखों को काव्यमय बनाते हैं।

अनेक स्थानों पर राजाओं की तुलना इन्द्र, विष्णु अथवा अन्य देवताओं से की गई है, जिससे उनकी वीरता और महानता का प्रभाव बढ़ता है। यह शैली तत्कालीन संस्कृत महाकाव्यों तथा प्रशस्ति-साहित्य से प्रभावित प्रतीत होती है। इसलिए गुप्तकालीन अभिलेख केवल इतिहासकारों के लिए ही नहीं, बल्कि संस्कृत साहित्य के अध्येताओं के लिए भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

इन अभिलेखों का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक मूल्यों का साहित्यिक निरूपण है। इनमें धार्मिक सहिष्णुता, दानशीलता, लोककल्याण, प्रजावत्सलता तथा धर्मपालन जैसे आदर्शों का बार-बार उल्लेख मिलता है। जूनागढ़ अभिलेख में सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण का वर्णन केवल एक प्रशासनिक कार्य नहीं है, बल्कि उसे लोकमंगल एवं राजधर्म के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार मंदसौर अभिलेख में नगर-जीवन, शिल्पकला, प्रकृति तथा सामाजिक समृद्धि का वर्णन तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। इससे स्पष्ट होता है कि गुप्तकालीन अभिलेख तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक चेतना के भी महत्त्वपूर्ण दर्पण हैं।

समग्रतः कहा जा सकता है कि गुप्तकालीन अभिलेखों में इतिहास और साहित्य परस्पर पूरक रूप में विद्यमान हैं। जहाँ एक ओर वे राजनीतिक एवं प्रशासनिक घटनाओं का विश्वसनीय विवरण प्रस्तुत करते हैं, वहीं दूसरी ओर साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम से उन घटनाओं को स्थायित्व, प्रभावशीलता एवं सांस्कृतिक गरिमा प्रदान करते हैं। यही कारण है कि गुप्तकालीन अभिलेख भारतीय अभिलेखीय साहित्य की सर्वोच्च उपलब्धियों में गिने जाते हैं।

7. निष्कर्ष

गुप्तकालीन अभिलेख भारतीय इतिहास एवं संस्कृत साहित्य की संयुक्त विरासत हैं। इन अभिलेखों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गुप्तकाल में अभिलेख केवल राजकीय घोषणाओं अथवा प्रशासनिक आदेशों तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे साहित्यिक अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम के रूप में भी विकसित हुए। प्रयाग प्रशस्ति, भीतरी स्तम्भ अभिलेख, जूनागढ़ अभिलेख, एरण, उदयगिरि तथा मंदसौर अभिलेखों में ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन अत्यन्त परिष्कृत एवं कलात्मक शैली में किया गया है। इनमें प्रयुक्त संस्कृत भाषा, अलंकारिक अभिव्यक्ति, भावात्मक शैली तथा प्रशस्ति-परम्परा यह सिद्ध करती है कि गुप्तकाल भारतीय साहित्यिक इतिहास का भी स्वर्णिम युग था।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि गुप्तकालीन प्रशस्तिकारों ने इतिहास को केवल घटनाओं का संग्रह न मानकर आदर्श जीवन-मूल्यों के प्रचार का माध्यम बनाया। राजाओं की वीरता, उदारता, धार्मिक सहिष्णुता तथा लोककल्याणकारी दृष्टिकोण का वर्णन साहित्यिक शैली में करके उन्होंने तत्कालीन समाज के लिए आदर्श शासन की अवधारणा प्रस्तुत की। इस प्रकार अभिलेखों में निहित ऐतिहासिक तथ्य साहित्यिक सौन्दर्य से युक्त होकर अधिक प्रभावशाली एवं स्थायी बन गए।

गुप्तकालीन अभिलेखों का साहित्यिक अध्ययन यह सिद्ध करता है कि इतिहास और साहित्य को पृथक-पृथक नहीं देखा जा सकता। अभिलेख जहाँ इतिहासकार को तथ्य प्रदान करते हैं, वहीं साहित्यकार को भाषा, शैली, काव्य-रचना तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के उत्कृष्ट उदाहरण उपलब्ध कराते हैं। इसलिए गुप्तकालीन अभिलेखों का अध्ययन केवल अभिलेखविद्या अथवा इतिहास तक सीमित न रहकर साहित्य, संस्कृति, भाषाविज्ञान तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा के व्यापक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जगन्नाथ. (1986). *भारतीय अभिलेख एवं मुद्राशास्त्र पर शोध.* नई दिल्ली।
- बाजपेयी, कृष्णदत्त. (1992). *ऐतिहासिक भारतीय अभिलेख.* जयपुर।
- गोयल, श्रीराम. (1982). *प्राचीन भारतीय अभिलेख-संग्रह* (भाग–1). जयपुर।
- गोयल, श्रीराम. (1984). *गुप्तकालीन अभिलेख.* मेरठ।
- गुप्ता, परमेश्वरीलाल. (1979). *प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख* (भाग–1). वाराणसी।
- ओझा, गौरीशंकर हीराचंद. (1959). *भारतीय प्राचीन लिपिमाला.* दिल्ली।
- उपाध्याय, वासुदेव. (1961). *प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन.* दिल्ली।
- उपाध्याय, वासुदेव. (1974). *गुप्त अभिलेख.* पटना।
- सरकार, दिनेशचन्द्र. (अनुवाद: कृष्णदत्त बाजपेयी). (1965). *भारतीय अभिलेखविद्या.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- सरकार, दिनेशचन्द्र. (1965). *भारतीय इतिहास एवं सभ्यता से सम्बन्धित चयनित अभिलेख* (प्रथम खण्ड). कलकत्ता।
- पाण्डेय, राजबली. (1962). *ऐतिहासिक एवं साहित्यिक अभिलेख.* वाराणसी।
- मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय. *गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेख* (एम.ए. इतिहास अध्ययन सामग्री). भोपाल